संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर म.प्र

एम.ए. संस्कृत

संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के उद्देय

PO-1. Critical Thinking: Identifying the assumptions that frame our actions, checking out the degree to which these assumptions are accurate and valid, and looking at our ideas and decisions (intellectual, organizational, and personal) from different perspectives.

PO-2. Effective Communication: Read, Write, Speak and listen clearly in English and Hindi (Bilingual).

PO-3. Social Interaction: Provide a social exchange between two or more individuals.

PO-4. Effective Citizenship: Demonstrate social concern and equity centered national development, and the ability to act with an informed awareness of issues and participate in civic life through volunteering.

PO-5. Ethics: Recognize different value and moral systems and correlate them with present system.

PO-6. Environment & Sustainability: To understand the responsibility to conserve natural resources and protect global ecosystems to support health & wellbeing.

PO-7. Self-Directed & Life-long learning: It focuses on the process by which students take control of their own learning, in particular how they set their own learning goals, locate appropriate resources, decide on which learning methods to use and evaluate their progress.

कार्यक्रम अधिगम परिणाम

संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि से संबद्ध अधिगम परिणाम इस प्रकार है–

PSO-1. साहित्य संप्रेषण के आधार बिंदुओं की जानकारी देना ताकि साहित्य के संबंध में एक स्पष्ट समझ विकसित हो सके।

PSO-2. संस्कृत साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के संबंध में पर्याप्त जानकारी मिल सके।

PSO-3. साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ने और समझने की योग्यता का विकास करना।

PSO-4. साहित्य लेखन की विविध शैली और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना।

प्रथम सेमेस्टर

प्रष्नपत्र प्रथम वेद

उद्देश्य –

CO-1. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक साहित्य का व्यापक परिचय देना है जिससे छात्र प्राचीन भारतीय ज्ञान तथा पूर्वजों की इस महानतम संस्कृति से परिचित हो सकें।

CO-2. इस प्रश्नपत्र में कुछ वैदिक देवताओं का विशेष अध्ययन है जो विशेषतः सृष्टि उत्पत्ति विषयक एवं समाज की उन्नति तथा सुधार विषयक है।

CO-3. वैदिक साहित्य का इतिहास हमारी संस्कृति तथा वैदिक वाङ्मय के प्रति छात्रों की रुचि जाग्रत करना है।

प्रष्नपत्र द्वितीय वेदाङ्ग

उद्देश्य –

CO-1. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को ऋग्वेद से लेकर वेदांग, निरुक्त तक वैदिक साहित्य का व्यापक परिचय देना ळें
CO-2. इसमें वैदिक देवताओं को जानने तथा परिचय प्राप्त करने हेतु ऋग्वेद के कुछ महत्त्वपूर्ण छंद भी सम्मिलित हैं।
CO-3. निरूक्त के कुछ अंशों के अध्ययन से शब्दों की वैदिक व्युत्पत्ति को समझने में सहायता मिलती है जबकि वैदिक व्याकरण वैदिक भाषा की विशिष्टता की व्याख्या करता है।

प्रष्नपत्र तृतीय पालि, प्राकृत एवं भाषा विज्ञान

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भाषा शास्त्र और आधुनिक भाषाविज्ञान की कुछ महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं और सिद्धान्तों से परिचित कराना है। इन अवधारणाओं और सिद्धान्तों के प्रकाश में संस्कृत भाषा के सिंहावलोकन एवं विश्लेषण में मदद करना है।

प्रष्नपत्र चतुर्थ भारतीय दर्शन

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भारतीय दर्शन के कुछ महत्त्वपूर्ण मूलभूत सिद्धान्तों के व्यापक और गहन अध्ययन द्वारा सशक्त विचारशक्ति को हासिल करने में सक्षम बनाना है।

प्रष्नपत्र पञ्चम भारतीय नीतिशास्त्र (दर्शन विभाग)

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नीतिशास्त्र के ज्ञान द्वारा छात्रों में नैतिकता का विकास करना है। सत्य, पुरुषार्थ एवं योग के सम्यक ज्ञान द्वारा छात्रों में जीवनोपयोगी कौशल तथा समाजोपयोगी उचित व्यवहार की शिक्षा देना है। समकालीन भारतीय नीतिशास्त्रीयों के विशेष नीति–गुणों से परिचित कराना है।

द्वितीय सेमेस्टर

प्रष्नपत्र प्रथम सांख्य एवं मीमांसा

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भारतीय दर्शन के दो प्रमुख ग्रन्थों सांख्यकारिका एवं अर्थसंग्रह के अध्ययन–अध्यापन से सांख्य एवं मीमांसा की मूलभूत अवधारणाओं तथा सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

प्रष्नपत्र द्वितीय काव्यशास्त्र

उद्देश्य –

CO. मम्मट का काव्यप्रकाश संस्कृत साहित्य में काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है जिसमें काव्य लक्षण, रस, ध्वनि, गुण–दोष, रीति और अलंकार की वैचारिक चर्चा पर एक संतुलित दृष्टिकोण प्राप्त होता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को काव्यप्रकाश के माध्यम से काव्य के विभिन्न आयामों अर्थात् प्रयोजन, लक्षण और काव्य भेदों का परिचय प्राप्त कराना है।

प्रष्नपत्र तृतीय भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत साहित्य में संरक्षित भारतीय संस्कृति के ज्ञान से परिचित कराना। वैदिक तथा लौकिक संस्कृति के महत्त्व से छात्रों अवगत होंगे। पर्यावरण के अध्ययन से छात्रों में पर्यावरण के प्रति चेतना को जाग्रत करना तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना। प्राचीन भारतीय संस्कृति में

धर्म के अर्थ एवं वैशिष्ट्य से परिचित कराना।

प्रष्नपत्र चतुर्थ काव्य (मेघदूत एवं कुमारसंभव)

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य कालिदास की विशिष्ट रचनाओं के सौन्दर्य से छात्रों को अवगत कराना है। कालिदास की कालजयी रचनाओं के भाषा–शिल्प, अलंकारों तथा उपमा प्रयोग के वैशिष्ट्य से छात्रों को परिचित कराना है।

प्रष्नपत्र पञ्चम काव्य (कर्पूरमंजरी एवं विद्धशालभंजिका)

उद्देश्य –

CO. महाकवि राजशेखर की प्राकृत भाषा में निबद्ध दो अनुपम कृतियों के साहित्यिक सौन्दर्य से छात्रों को परिचित कराना एवं रचनाओं में चित्रित तात्कालिक सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों से परिचित कराना।

तृतीय सेमेस्टर

प्रष्नपत्र प्रथम महाकाव्य

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य पद्य काव्य विधाओं में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं महाकवियों द्वारा सर्वाधिक प्रयुक्त काव्यविधा महाकाव्य से परिचित कराना तथा बृहत्त्रयी एवं लघुत्रयी में परिगणित महाकवि माघ एवं कालिदास कृत रचनाओं में क्रमशः प्रौढ़ी एवं समासोक्ति जन्य काव्य सौन्दर्य को प्रस्फुटित करना है।

प्रष्नपत्र द्वितीय नाट्यशास्त्र

उद्देश्य –

CO. पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को नाट्यशास्त्रीय कथानक, अभिनेता, रस जैसे विभिन्न नाट्य तत्त्वों से परिचित कराना है। नाट्य के विभिन्न भेदों से परिचित कराते हुये नाट्य संरचना में छात्रों को सक्षम बनाना है।

प्रष्नपत्र तृतीय संस्कृत वाज्मय एवं आधुनिक विश्व

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्रों से परिचित कराना है, तथा धर्म के प्रमुख आधार–स्तंभ स्मृतियों से अवगत कराना है।

प्रष्नपत्र चतुर्थ साहित्यशास्त्र (काव्यालज्कार एवं काव्यप्रकाश)

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भारतीय काव्यशास्त्र के आचार्य मम्मट द्वारा विरचित काव्यप्रकाश के संपूर्ण अध्यापन द्वारा छात्रों में काव्यशास्त्रीय प्रतिभा का विकास करना है जिससे वह भी उत्तम काव्य रचना में सक्षम हो सकें। साथ ही भामह जैसे अलंकारशास्त्री के ग्रन्थ के अध्ययन द्वारा भी काव्य में अलंकार तत्त्वों की उपयोगिता तथा अनिवार्यता से अवगत कराना है। छात्रों में विभिन्न प्रकार के काव्य–दोष, काव्यगुण और काव्य अलंकारों के ज्ञान से परिपुष्ट करना भी इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है।

प्रष्नपत्र पञ्चम साहित्यशास्त्र

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भारतीय काव्यशास्त्र के विविध आयामों एवं मार्गों के प्रणेता महाकवि दण्डी तथा महाकवि राजशेखर के काव्यशास्त्रीय चिंतन से अवगत कराना है।

चतुर्थ सेमेस्टर

प्रष्नपत्र प्रथम रूपक

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को महत्त्वपूर्ण साहित्यिक रचनाओं के अध्ययन के माध्यम से संस्कृत साहित्य की समृद्ध परंपराओं से अवगत कराना।

प्रष्नपत्र द्वितीय गद्य, पद्य तथा चम्पू

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य श्रव्य काव्य की समस्त विधाओं को सांगोपांग बोध कराना एवं प्रतिनिधि ग्रन्थों से अवगत कराना है।

प्रष्नपत्र तृतीय व्याकरण, अनुवाद एवं निबन्ध

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत निबंध लेखन और अन्य भाषाओं से संस्कृत मे अनुवाद की कला में प्रशिक्षित करना है। लघुसिद्धान्तकौमुदी के पाठ से व्याकरण के कुछ अनुप्रयुक्त भागों को भी छात्रों में संस्कृत भाषा के कौशल को विकसित करने के उद्देश्य से पढ़ाया जायेगा जो संस्कृत भाषा में अच्छा निबंध लिखने और अनुवाद करने की क्षमता को बढ़ायेगा।

प्रष्नपत्र चतुर्थ विशेषकवि (कालिदास)

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य कालिदास की विभिन्न कृतियों के सौन्दर्य तथा चारुता से अवगत कराना है जिससे छात्रों में संस्कृतसाहित्य के प्रति रुचि जाग्रत हो।

प्रष्नपत्र पञ्चमं विशेषकवि (भवभूति)

उद्देश्य –

CO. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नाट्य शास्त्रीय लक्षणों से इतर दृश्य काव्य के प्रयोग पर बल देना है। नाट्य शास्त्र से इतर होने पर भी रसान्वित दृश्य काव्य पर बल देना है तथा नवीन कवि कल्पनाओं को उकेरना है।